

प्राचीन ज्ञान और आधुनिक शासन: कौटिल्य के अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता

डॉ. अविनाश होता

Assistant Professor (Guest), Likhan Sai Govt. College Tapkara, Jashpur (C.G.)

सारांश :-

तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास रचित कौटिल्य का अर्थशास्त्र, शासन कला, आर्थिक नीति, सैन्य रणनीति और शासन पर एक प्राचीन ग्रंथ है। सदियों पुराना होने के बावजूद, इसके सिद्धांत आधुनिक नीतिगत ढाँचों के लिए अद्भुत प्रासंगिकता प्रदर्शित करते हैं। यह शोध पत्र इस बात का अन्वेषण करता है कि कराधान, विनियमन, भ्रष्टाचार-निरोध, आर्थिक शासन, विदेश नीति और सतत विकास पर कौटिल्य की अंतर्दृष्टि भारत और वैश्विक अर्थव्यवस्था के समकालीन शासन मॉडलों और आर्थिक रणनीतियों के साथ कैसे प्रतिध्वनित होती है। यह पत्र अर्थशास्त्र के सिद्धांतों जैसे 'सप्तांग सिद्धांत', 'मंडल सिद्धांत' और 'मत्स्यन्याय' और कल्याणकारी अर्थशास्त्र, नियामक राज्य, सुशासन और भू-राजनीतिक रणनीतियों जैसी आधुनिक अवधारणाओं के बीच तुलनात्मक विश्लेषण करता है। इसके अतिरिक्त, यह मूल्यांकन करता है कि संसाधन प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण पर प्राचीन नीति तंत्र वर्तमान सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के साथ कैसे संरेखित होते हैं तथा भारत में अंतर्जात राजनीतिक-सांस्कृतिक संसाधनों—जिसमें कौटिल्य भी शामिल हैं—के सक्रिय 'पुनः उपयोग' के संकेत देते हैं। सैद्धांतिक और विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से, इस शोधपत्र का उद्देश्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र के स्थायी ज्ञान और आधुनिक नीतिगत चुनौतियों के लिए इसकी प्रयोज्यता को रेखांकित करना है, तथा नीति निर्माताओं, अर्थशास्त्रियों और शासन विद्वानों के लिए मूल्यवान सबक प्रदान करना है।

संकेत शब्द :- कौटिल्य अर्थशास्त्र, आर्थिक नीति, आधुनिकता, प्रासंगिकता

परिचय :-

भारतीय चिंतन परंपरा में कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' न केवल एक आर्थिक ग्रंथ है, बल्कि यह राजनीति, प्रशासन, विदेश नीति और शासन के सिद्धांतों का भी अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है। आधुनिक शासन में जहां नीति निर्माण और प्रशासन में नवीनतम प्रबंधन तकनीकों का उपयोग हो रहा है, वहीं कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित सिद्धांत आज भी प्रासंगिक और मार्गदर्शक हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य कौटिल्य के

अर्थशास्त्र में वर्णित शासन के सिद्धांतों का आधुनिक प्रशासन एवं नीति निर्माण में उनकी उपयोगिता का विश्लेषण करना है।

कौटिल्य का जीवन और विरासत

चाणक्य का जन्म ईसा पूर्व 375 के लगभग चणय नामक ग्राम में हुआ था इस स्थान की स्थिति अज्ञात है। कहीं-कहीं इसे कुसुमसुर (पाटलिपुत्र) और कहीं-कहीं तक्षशिला का निवासी भी बताया है। उनकी माता का नाम चणऐश्वरी और पिता का नाम चणक था। चणक का पुत्र होने से उनका नाम चाणक्य हुआ। कौटिल्य, जिन्हें चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय संस्कृति और प्रशासन के महान गुरु माने जाते हैं। वे भारतीय इतिहास में मौर्य साम्राज्य के समय में चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। चंद्रगुप्त मौर्य को गद्दी पर बैठाकर मौर्य साम्राज्य की स्थापना में निर्णायक भूमिका निभाई। वे महान शिक्षक, अर्थशास्त्री, कूटनीतिज्ञ और मौर्य साम्राज्य के प्रधानमंत्री। कौटिल्य ने अपने शिक्षाओं और नीति ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' के माध्यम से राजनीति, आर्थिक व्यवस्था और समाज को संबोधित किया। (कौटिल्य अर्थशास्त्र, चाणक्य नीति ग्रंथ)

उद्देश्य :- इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य कौटिल्य अर्थशास्त्र का आधुनिक शासन में प्रासंगिकता का अध्ययन करना है।

अध्ययन पद्धति :- अध्ययन का स्वरूप ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक (Historical-Analytical) एवं तुलनात्मक (Comparative) स्वरूप का होगा।

डेटा संग्रहण (Data Collection): प्राथमिक स्रोत (Primary Sources): कौटिल्य का अर्थशास्त्र, प्राचीन ग्रंथों के उद्धरण। **द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources):** विभिन्न शोध पत्र, जर्नल, पुस्तकें, नीति दस्तावेज (Policy Papers), गुड गवर्नेंस रिपोर्ट्स (WGI Reports) आदि।

डेटा विश्लेषण (Data Analysis): तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method) द्वारा कौटिल्य के सिद्धांतों और आधुनिक शासन तंत्र के तत्वों के बीच समानता व भिन्नता का विश्लेषण किया जाएगा।

सीमाएँ (Limitations): अध्ययन में कौटिल्य के अर्थशास्त्र के प्रशासनिक और नीति निर्माण सम्बन्धी अंशों पर ही केंद्रित किया जाएगा।

कौटिल्य अर्थशास्त्र की प्रमुख विशेषताएँ

1. **सप्तांग सिद्धांत:** राज्य के सात अवयवों (स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोश, दण्ड, मित्र) की संकल्पना जो किसी भी शासन की स्थिरता के लिए आवश्यक मानी जाती है।
2. **धर्म, अर्थ और काम का संतुलन:** शासन में नैतिकता (धर्म), आर्थिक समृद्धि (अर्थ) और सामाजिक आवश्यकताओं (काम) के बीच संतुलन पर बल।
3. **दण्डनीति और न्याय प्रशासन:** विधि और अनुशासन के माध्यम से समाज में शांति और व्यवस्था बनाए रखने की रणनीति।
4. **गुप्तचर व्यवस्था (स्पाई नेटवर्क):** आंतरिक सुरक्षा और प्रशासन पर नियंत्रण हेतु विस्तृत जासूसी प्रणाली।
5. **विपत्ति प्रबंधन:** राज्य पर आने वाली आपदाओं एवं संकटों से निपटने की रणनीतियाँ।

आधुनिक शासन में प्रासंगिक

1. **सप्तांग सिद्धांत और आधुनिक गवर्नेंस इंडिकेटर्स** कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत में शासन के सात अनिवार्य अंगों का उल्लेख है :-
 - a. स्वामी (राजा) – नेतृत्व एवं निर्णय क्षमता,
 - b. अमात्य (मंत्री एवं नौकरशाही) – प्रशासनिक दक्षता एवं नैतिकता,
 - c. जनपद (प्रजा एवं भू-क्षेत्र) – जनकल्याण व नागरिक सहभागिता,
 - d. दुर्ग (सुरक्षा तंत्र) – आंतरिक और बाहरी सुरक्षा,
 - e. कोष (वित्तीय संसाधन) – आर्थिक स्थायित्व व राजकोषीय प्रबंधन,
 - f. दण्ड (सेना एवं विधि व्यवस्था) – विधि-व्यवस्था एवं अनुशासन,
 - g. मित्र (राजनयिक सहयोगी) – बाह्य संबंध व कूटनीति।

आज के World Governance Indicators (WGIs) में भी यही घटक विभिन्न रूपों में सम्मिलित हैं, जैसे—Political Stability, Government Effectiveness, Regulatory Quality, Rule of Law, Control of Corruption आदि। कौटिल्य के सप्तांग दृष्टिकोण में शासन व्यवस्था के इन सभी पहलुओं का संतुलन बनाए रखने पर बल दिया गया था, जो आज के सुशासन के मानकों के साथ पूर्णतः संगत है। (विश्व बैंक – गुड गवर्नेंस रिपोर्ट, 2023)

2. **कर नीति (कराधान नीति) - आधुनिक प्रगतिशील कर और कौटिल्य का 'शतभाग' सिद्धांत :**
कौटिल्य ने **अर्थशास्त्र** में यह स्पष्ट किया कि राज्य का मुख्य आय स्रोत कर (Tax) है, किन्तु कर संग्रहण में अत्यधिक न्यायप्रियता, मितव्ययता और जनहित का ध्यान रखा जाना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि राजा को प्रजा की आय का **‘षट्भाग’** (1/6 भाग) कर के रूप में लेना चाहिए। यह कर न तो अधिक होना चाहिए जिससे प्रजा पर भार पड़े और न ही इतना कम कि राज्य की आवश्यकताएँ पूरी न हो सकें। कौटिल्य कर संग्रहण को **‘मधुमक्खी के शहद संग्रह’** की तरह मानते थे, जिसमें मधुमक्खी फूलों को बिना क्षति पहुँचाए शहद एकत्र करती है। यह कर नीति आज के **“Optimal Tax Theory”** के सिद्धांत के अत्यंत निकट है।
3. **नौकरशाही (Bureaucracy) पर कौटिल्य की दृष्टि :-** कौटिल्य ने अमात्य (मंत्रियों और अधिकारियों) की नियुक्ति में योग्यता (Merit), नैतिकता (Integrity), और कर्तव्यपरायणता (Duty-Consciousness) को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उन्होंने नौकरशाही में भ्रष्टाचार, अकर्मण्यता और पक्षपात को राज्य के पतन के प्रमुख कारणों में गिना। आज के प्रशासनिक सुधारों में Civil Services Reforms, Bureaucratic Accountability और Capacity Building पर जो बल दिया जा रहा है, वह कौटिल्य की इसी अवधारणा की आधुनिक व्याख्या है। (अर्विंद शर्मा, 2019)
4. **पारदर्शिता (Transparency) और उत्तरदायित्व (Accountability) की अवधारणा :-** कौटिल्य ने शासन में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने हेतु एक प्रभावी निगरानी प्रणाली (Surveillance Mechanism) की वकालत की। उन्होंने राजकोषीय पारदर्शिता, कार्य निष्पादन में जवाबदेही, और अधिकारियों के कार्यों पर गुप्तचर तंत्र के माध्यम से नियंत्रण पर विशेष बल दिया। आज की RTI Act, Performance Audit, e-Governance और Citizen Charters जैसी नीतियाँ कौटिल्य के इन्हीं सिद्धांतों की आधुनिक अभिव्यक्ति हैं। (नीति आयोग – भारत में सुशासन की पहल, 2024) उनके अनुसार, शासक का दायित्व केवल आदेश देना नहीं, बल्कि जनता के प्रति उत्तरदायी और नैतिक रूप से पारदर्शी होना भी है।
5. **प्रशासनिक सुधारों में कौटिल्य की प्रासंगिकता :-** कौटिल्य के अनुसार शासन प्रणाली को समय और परिस्थिति के अनुरूप लगातार सुधारना आवश्यक है। उन्होंने अधिकारियों के आचरण, कार्यशैली और लोकहित में उनकी जवाबदेही तय करने हेतु स्पष्ट नीतिगत दिशा-निर्देश दिए। आज की Administrative Reforms Commissions और Good Governance Initiatives कौटिल्य के इसी विचार का विस्तृत रूप हैं। उनके ‘लोक कल्याण केंद्रित प्रशासन’ की अवधारणा ही आज के Citizen-Centric Governance की आधारशिला है।

6. **आर्थिक नीतियों में राज्य की भूमिका:** अर्थशास्त्र में वर्णित 'विनियमन और नियंत्रण' की अवधारणा आज के 'वेलफेयर स्टेट' (कल्याणकारी ताराज्य) की नीति के समान है, जहाँ सरकार नागरिकों की भलाई हेतु हस्तक्षेप करती है। यह दृष्टिकोण आधुनिक *वेलफेयर स्टेट (कल्याणकारी राज्य)* की अवधारणा के साथ मेल खाता है, जहाँ सरकार सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को दूर करने के लिए हस्तक्षेप करती है। आज की आर्थिक नीतियाँ, जैसे—सब्सिडी, सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ, और नियामक संस्थाएँ (Regulatory Bodies)—कौटिल्य की आर्थिक दृष्टि की ही पुनःस्थापना हैं।
7. **कंटिन्जेन्सी प्लानिंग (आपदा प्रबंधन):** कौटिल्य ने विपत्ति प्रबंधन (Disaster Management) को शासन की एक अनिवार्य जिम्मेदारी माना। उन्होंने कहा था कि प्राकृतिक आपदाओं, अकाल, महामारी (जनपदध्वंस), और आर्थिक संकटों से निपटने के लिए राज्य को पहले से ही योजनाएँ तैयार रखनी चाहिए। आज के परिप्रेक्ष्य में जब कोविड-19 जैसे वैश्विक स्वास्थ्य संकट, जलवायु आपदाएँ और आर्थिक मंदियाँ शासन के सामने बड़ी चुनौतियाँ बनकर खड़ी हैं, कौटिल्य की यह नीति अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती है। वर्तमान समय की *Disaster Preparedness, Relief Mechanisms, और Emergency Economic Packages* उसी 'Contingency Planning' दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जिसकी परिकल्पना कौटिल्य ने सदियों पूर्व की थी।
8. **भ्रष्टाचार एवं कौटिल्य के (करप्शन-एंटी) निवारण-दुष्टाचार निवारण का सूत्र :** आज के समय में भ्रष्टाचार से निपटने के लिए अनेक विधिक और संस्थागत उपायों का सहारा लिया जाता है। *लोकपाल, सीवीसी (Central Vigilance Commission), सीबीआई (CBI), RTI (Right to Information)* जैसी संस्थाओं एवं अधिनियमों का उद्देश्य शासन में पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व सुनिश्चित करना है। डिजिटल गवर्नेंस, ईटेंडिंग-ग, और आधारआधारित लाभान्तरण - जैसे उपाय भ्रष्टाचार पर प्रभावी अंकुश लगाने की दिशा में आधुनिक उपाय हैं। किन्तु, इन सभी उपायों की जड़ में वही सिद्धांत है जिसे कौटिल्य ने अपने काल में 'निराश्रित तंत्र', 'गुप्तचर प्रणाली', और 'दंड नीति' के माध्यम से प्रतिपादित किया था।
9. **सुरक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अर्थशास्त्र :** कौटिल्य ने राज्य की सुरक्षा में आर्थिक शक्ति को मूलभूत कारक माना। राजकोष (Treasury), सेना (Army), किले (Fortresses), गुप्तचर (Intelligence) और मित्र (Allies) को राज्य की सुरक्षा के पाँच स्तंभ बताया। आज के समय में भी रक्षा बजट, रणनीतिक आर्थिक सहयोग, एवं खुफिया तंत्र को राष्ट्रीय सुरक्षा के अनिवार्य घटक माना जाता है, जो कौटिल्य के आर्थिक दृष्टिकोण की ही आधुनिक अभिव्यक्ति है। कौटिल्य का *'मंडल सिद्धांत'* अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में शक्ति-संतुलन (Balance of Power) की विचारधारा

का प्राचीन रूप है। इस सिद्धांत में उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि प्रत्येक राज्य का निकटवर्ती पड़ोसी राज्य स्वाभाविक रूप से प्रतिद्वंद्वी होता है, जबकि उससे आगे का राज्य संभावित मित्र होता है। इस नीति के तहत राज्यों को अपने विरोधियों के विरोधियों से मित्रता कर शक्ति-संतुलन बनाना चाहिए। आधुनिक विश्व राजनीति में भी गठबंधन (Alliances), गुटनिरपेक्षता (Non-Alignment) और रणनीतिक साझेदारी (Strategic Partnerships) जैसी अवधारणाएँ कौटिल्य के मंडल सिद्धांत की ही व्याख्याएँ हैं। कौटिल्य ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में **षाड्गुण्य नीति** (षट् गुण नीति) का उल्लेख किया है, जिसमें छह प्रकार की कूटनीतिक रणनीतियों का वर्णन किया गया है— 1. संधि (Treaty), 2. विग्रह (War), 3. यान (Preparation for War), 4. आसन (Neutrality), 5. द्वैधीभाव (Dual Policy) और 6. संश्रय (Seeking Protection)। आज के अंतर्राष्ट्रीय कूटनीतिक संबंधों में भी किसी देश की विदेश नीति इन्हीं रणनीतियों के मिश्रण पर आधारित होती है। कौटिल्य ने कहा था कि परिस्थितियों के अनुसार नीति को लचीला रखा जाना चाहिए, जो कि आज की **Realpolitik** नीति के अनुकूल है।

10. **'मत्स्यन्याय' सिद्धांत और वर्तमान राज्य की भूमिका में सामंजस्य :-** कौटिल्य ने मत्स्यन्याय को सामाजिक अव्यवस्था और अराजकता का प्रतीक बताया, जिसमें "बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है"। उनके अनुसार, यदि राज्य व्यवस्था कमजोर हो या शासन व्यवस्था सुचारू रूप से कार्य न करे, तो समाज में शक्तिशाली वर्गों द्वारा कमजोर वर्गों का शोषण आरंभ हो जाता है। इसलिए उन्होंने सशक्त, अनुशासित एवं उत्तरदायी शासन व्यवस्था की वकालत की, जो समाज के हर वर्ग की सुरक्षा सुनिश्चित करे। यह दृष्टिकोण राज्य की उस भूमिका को स्पष्ट करता है जिसमें राज्य का हस्तक्षेप (Intervention) समाज में न्याय, समानता और स्थिरता बनाए रखने हेतु आवश्यक है। आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जब आर्थिक उदारीकरण और निजीकरण के चलते बाजार शक्तियों का वर्चस्व बढ़ा है, राज्य की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। आधुनिक युग में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा यह कहती है कि राज्य का कार्य केवल विधि-व्यवस्था बनाये रखना नहीं है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक समानता को सुनिश्चित करना भी है। गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा-अस्वरता, स्वास्थ्य संकट जैसे मुद्दों पर राज्य के हस्तक्षेप के बिना समावेशी विकास संभव नहीं है। कौटिल्य के मत्स्यन्याय सिद्धांत में निहित यह चेतावनी कि 'राज्य की निष्क्रियता अराजकता को जन्म देती है', आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। Welfare State की अवधारणा उसी मत्स्यन्याय के निवारण का आधुनिक स्वरूप है, जहाँ राज्य अपने नागरिकों की भलाई के लिए निर्णायक भूमिका निभाता है।

11. **आज की भू-राजनीति (भू-राजनीति) में कौटिल्य की राजनीतिक चतुराई (राजनीतिक बुद्धि) के तत्व :-** कौटिल्य की राजनीति में आदर्शवाद की बजाय यथार्थवाद (Realism) पर बल दिया गया

है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि राज्य का मुख्य उद्देश्य अपने हितों की रक्षा करना है और इसके लिए आवश्यक हो तो धोखा, चालाकी और गोपनीयता का भी सहारा लिया जाना चाहिए। आज की विश्व राजनीति में भी 'Realpolitik' की नीति अपनाई जाती है, जहाँ नैतिकता की बजाय राष्ट्रीय हित सर्वोपरि माने जाते हैं। अमेरिका, चीन, रूस जैसी महाशक्तियाँ कौटिल्य के इसी दृष्टिकोण का व्यवहारिक उपयोग करती हैं। कौटिल्य ने 'मंडल सिद्धांत' और 'षाड्गुण्य नीति' के माध्यम से शक्ति संतुलन (Balance of Power) को बनाए रखने का सूत्र दिया। उनका मानना था कि पड़ोसी का पड़ोसी स्वाभाविक मित्र होता है और शक्ति संतुलन बनाए रखने के लिए राजनयिक गठबंधन (Alliances), युद्ध, तटस्थता और द्वैधीभाव (Dual Policy) जैसी नीतियों का समयानुसार उपयोग करना चाहिए। आज की भू-राजनीति में जैसे *QUAD, BRICS, NATO*, जैसी रणनीतिक साझेदारियाँ बनती हैं, वे कौटिल्य के इन्हीं सिद्धांतों की आधुनिक व्याख्याएँ हैं। कौटिल्य ने स्पष्ट कहा कि आर्थिक शक्ति के बिना सैन्य या राजनीतिक शक्ति का विस्तार संभव नहीं है। उन्होंने कर नीति, व्यापार नियंत्रण और संसाधनों पर राज्य की पकड़ को राष्ट्रीय शक्ति का आधार बताया। आज भी आर्थिक महाशक्तियाँ अपने आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए भूराजनीतिक रणनीतियाँ बनाती हैं, जैसे— बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (China), मुक्त व्यापार समझौते (Free Trade Agreements), और आर्थिक प्रतिबंध (Economic Sanctions)। ये सभी कौटिल्य के आर्थिक चतुराई के सिद्धांतों का ही आधुनिक रूप हैं।

12. **प्रकृति और सम्पत्ति के सदुपयोग पर कौटिल्य की दृष्टि :-** कौटिल्य ने राज्य को प्रकृति का रक्षक (Guardian of Nature) बताया। उनके अनुसार वन, जल, खनिज, कृषि भूमि आदि प्राकृतिक संसाधन केवल आर्थिक संपदा ही नहीं, अपितु राज्य की दीर्घकालिक सुरक्षा एवं समृद्धि के आधार हैं। उन्होंने "वनों की अंधाधुंध कटाई, जलस्रोतों का प्रदूषण एवं खनिजों का अविवेकी दोहन" को राज्य के लिए घातक बताया। कौटिल्य ने वन-रक्षा, जल संरक्षण और कृषि भूमि के सतत उपयोग पर विशेष बल दिया। उन्होंने राजकीय अधिकारियों को इन संसाधनों के संरक्षण हेतु कड़े निर्देश दिए और उल्लंघन पर दंड का प्रावधान किया। (कौटिल्य अर्थशास्त्र, चाणक्य नीति ग्रंथ)
13. **सतत विकास और आर्थिक दृष्टि :-** कौटिल्य के अनुसार, आर्थिक विकास का उद्देश्य केवल तात्कालिक लाभ नहीं, अपितु समाज की दीर्घकालिक समृद्धि एवं संतुलन होना चाहिए। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के पुनर्भरण (Replenishment) और टिकाऊ उपयोग (Sustainable Utilization) पर बल दिया। आज की Green Economy, जिसमें अक्षय ऊर्जा (Renewable Energy), जैविक कृषि (Organic Farming), और कार्बन न्यूट्रल पॉलिसीज जैसे उपाय अपनाए जा रहे हैं, कौटिल्य की आर्थिक दृष्टि की ही आधुनिक अभिव्यक्ति है। (अर्विंद शर्मा, 2019)

14. **पर्यावरणीय संकट प्रबंधन में कौटिल्य की प्रासंगिकता :-** कौटिल्य ने प्राकृतिक आपदाओं (Natural Calamities), अकाल, और जलवायु असंतुलन से निपटने के लिए राज्य को पहले से तैयार रहने की नीति (Contingency Planning) अपनाने का निर्देश दिया। आज के समय में जब पर्यावरणीय संकट— जैसे वैश्विक तापमान वृद्धि, जलवायु परिवर्तन, और जैव विविधता का क्षरण— मानवता के समक्ष गंभीर चुनौती हैं, कौटिल्य का संकट प्रबंधन दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरणीय नीति निर्माण के लिए दिशानिर्देशक बन सकता है।
15. **आधुनिक हरित अर्थव्यवस्था (Green Economy) और जलवायु नीति से संबंध आज की Green Economy का मूल सिद्धांत है :—** विकास के साथ-साथ पर्यावरण का संरक्षण। संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, कार्बन उत्सर्जन में कटौती, नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार और पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा जैसी नीतियाँ वैश्विक मंच पर प्राथमिकता में हैं। कौटिल्य के विचार, जिनमें प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग, पुनर्भरण (Replenishment) और दीर्घकालिक आर्थिक दृष्टिकोण को महत्व दिया गया है, आधुनिक हरित अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों से पूर्णतः मेल खाते हैं।
- a. उदाहरणस्वरूप, कौटिल्य ने जलाशयों (Reservoirs) के निर्माण, सिंचाई व्यवस्था के विकास, और कृषि योग्य भूमि की उर्वरता बनाये रखने की जो नीतियाँ दीं, वे आज की Sustainable Agriculture Practices की जड़ें हैं। इसी प्रकार, प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन हेतु कौटिल्य द्वारा प्रस्तावित नीति आज की Disaster Resilience Planning का आधार मानी जा सकती है।
16. **सतत विकास में अर्थशास्त्र और पर्यावरण का संतुलन :-** कौटिल्य ने स्पष्ट किया कि आर्थिक विकास केवल तभी टिकाऊ (Sustainable) हो सकता है जब प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन (Over-Exploitation) न हो और पर्यावरणीय संतुलन बना रहे। उन्होंने 'अर्थ' और 'धर्म' के संतुलन पर विशेष बल दिया, जहाँ अर्थ (आर्थिक समृद्धि) का उद्देश्य धर्म (सामाजिक और प्राकृतिक संतुलन) की रक्षा होना चाहिए। आज की जलवायु नीतियाँ (Climate Policies) भी इसी तथ्य को स्वीकार करती हैं कि आर्थिक प्रगति तभी सार्थक है जब वह पर्यावरण को क्षति पहुँचाए बिना हो।

निष्कर्ष : कौटिल्य का अर्थशास्त्र केवल एक प्राचीन ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह शासन, प्रशासन और नीति निर्माण का सार्वकालिक मार्गदर्शक है। आधुनिक समय में 'गुड गवर्नेंस', 'नैतिक प्रशासन', 'आर्थिक नियोजन', 'सुरक्षा रणनीति' एवं 'आपदा प्रबंधन' जैसे विषयों में कौटिल्य के सिद्धांतों की प्रासंगिकता न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी परिलक्षित होती है। आधुनिक नीति-निर्माताओं के लिए कौटिल्य

की नीतियाँ न केवल ऐतिहासिक धरोहर हैं, बल्कि वे एक 'Time-Tested Strategic Manual' के रूप में भी कार्य करती हैं। अतः, अतः, कौटिल्य की नीति आज के आर्थिक नीति-निर्माताओं के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में अत्यंत प्रासंगिक है। (आर. शास्त्री, 2020) कौटिल्य के विचारों का गहन अध्ययन एवं उन्हें आधुनिक संदर्भों में लागू करना आज की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र – चाणक्य नीति ग्रंथ
2. आर. शास्त्री, "कौटिल्य और भारतीय राज्यcraft", प्रकाशन वर्ष: 2020
3. अर्विंद शर्मा, "प्राचीन भारत का प्रशासनिक ढांचा", 2019
4. विश्व बैंक – गुड गवर्नेंस रिपोर्ट, 2023
5. नीति आयोग – भारत में सुशासन की पहल, 2024
6. शर्मा, आर.एस. (2008). *प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
7. सिंह, उपेन्द्र. (2016). *Political Thought in Ancient India*. Oxford University Press.
8. बलवन्ते, एम.एन. (2014). *Kautilya's Arthashastra: A Timeless Guide to Strategy*. Jaico Publishing House.
9. बाशम, ए.एल. (2005). *भारत का सांस्कृतिक इतिहास*. दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ.
10. हब्बिब, इरफान. (2011). *The Agrarian System of Mughal India (1556–1707)* — प्रारंभिक भारतीय अर्थव्यवस्था की ऐतिहासिक समझ के लिए प्रासंगिक.
11. परांजपे, मकरंद (2018). *The Dharma of Governance: A Study in Indian Political Thought*. Routledge India.
12. बंधोपाध्याय, डी. (2010). *Kautilya and Modern Indian Statecraft*. Indian Journal of Political Science, Vol. 71(2).
13. चक्रवर्ती, आर. (2017). *Trade and Traders in Early Indian Society*. Manohar Publishers.
14. मिश्रा, सुनील कुमार. (2021). *कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सुशासन की अवधारणा और उसकी समकालीन प्रासंगिकता*. भारतीय सामाजिक विज्ञान पत्रिका, खंड 45(3).